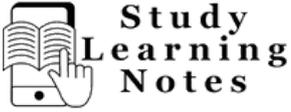
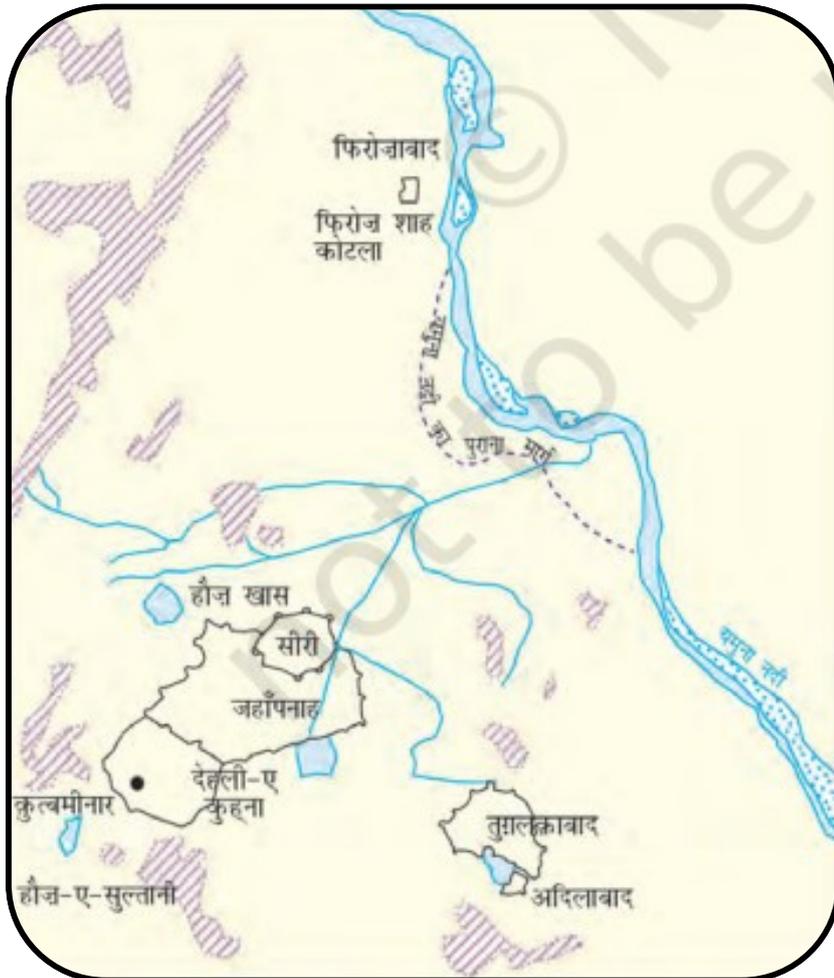


अध्याय 3: दिल्ली: बारहवीं से पंद्रहवीं शताब्दी



दिल्ली एक महत्वपूर्ण शहर 12वीं शताब्दी में बना। पहले पहल तोमर राजपूतों के काल में दिल्ली इसके साम्राज्य की राजधानी बनी। 12वीं सदी के मध्य में तोमरों को अजमेर के चौहानों (चाहमान) ने हराया। इन दोनों के राज्यकाल में ही दिल्ली वाणिज्य का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया।



13वीं-14वीं सदी में दिल्ली सल्तनत के कुछ चुने हुए शहर

- इस शहर में बहुत सारे समृद्धिशाली जैन व्यापारी रहते थे जिन्होंने अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया। यहाँ देहलीवाल नाम के सिक्के ढाले जाते थे।
- **13वीं सदी के आरंभ में दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई।** दिल्ली एक ऐसी राजधानी में बदल गई जिसका नियंत्रण इस उपमहाद्वीप के बहुत बड़े क्षेत्र पर फैला था।

राजपूत वंश

तोमर (आरंभिक बारहवीं शताब्दी—1165)

- अनंगपाल 1130—1145

चौहान (1165—1192)

- पृथ्वीराज चौहान 1175—1192

प्रारंभिक तुर्की शासक (1206—1290)

- कुतबउद्दीन ऐबक 1206—1210
- शमसुद्दीन इल्तुतमिश 1210—1236
- रज़िया 1236—1240
- गयासुद्दीन बलबन 1266—1287

खलजी वंश (1290—1320)

- जलालुद्दीन खलजी 1290—1296
- अलाउद्दीन खलजी 1296—1316

तुग़लक़ वंश (1320—1414)

- गयासुद्दीन तुग़लक़ 1320—1324
- मुहम्मद तुग़लक़ 1324—1351
- फ़िरोज़ शाह तुग़लक़ 1351—1388

सैयद वंश (1414—1451)

- खिज़्र खान 1414—1421

लोदी वंश (1451—1526)

- बहलोल लोदी 1451—1489

सुलतानों के अधीन दिल्ली

फ़ारसी में लिखे गए तवारीख के लेखक सचिव, प्रशासक, कवि और दरबारी होते थे, जो घटनाओं का वर्णन करते और शासकों को प्रशासन संबंधी सलाह भी देते थे। वे न्यायसंगत शासन के महत्व पर बल देते थे।

- तवारीख के लेखक नगरों (विशेषकर दिल्ली) में रहते थे।
- वे अक्सर इतिहास सुल्तानों के लिए, उनसे ढेर सारे इनाम-इकराम पाने की आशा में लिखा करते थे।
- ये लेखक शासकों को **जन्मसिद्ध अधिकार और लिंगभेद पर आधारित 'आदर्श' समाज व्यवस्था** बनाए रखने की सलाह देते थे। उनके विचारों से सारे लोग सहमत नहीं होते थे।

➔ **1236 में सुलतान इल्तुतमिश की बेटी रज़िया के सिंहासन पर बैठने पर इतिहासकार मिन्हाज-ए-सिराज, सभी भाइयों से अधिक योग्य और सक्षम होने पर भी रानी के रूप में मान्यता नहीं दे पा रहा था। दरबारी जन भी उसके स्वतंत्र रूप से शासन करने से प्रसन्न नहीं थे। 1240 में उसे सिंहासन से हटा दिया गया।**

खलजी और तुग़लक़ वंश के अंतर्गत प्रशासन—नज़दीक से एक नज़र

दिल्ली के आरंभिक सुल्तान, विशेषकर इल्तुतमिश, सामंतों और ज़मींदारों के स्थान पर अपने विशेष गुलामों (फ़ारसी में बंदगाँ) को सूबेदार नियुक्त करते थे।

- इन्हें सैनिक सेवा के लिए खरीदा जाता था।
- राज्य के कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण राजनीतिक पदों पर काम करने के लिए उन्हें प्रशिक्षित किया जाता था।
- वे अपने मालिक पर निर्भर होते थे, इसलिए सुलतान भी उन पर विश्वास कर सकते थे।

➔ खलजी तथा तुग़लक़ शासक बंदग़ों का इस्तेमाल करते रहे और साथ ही अपने पर आश्रित निम्न वर्ग के लोगों को ऊँचे राजनितिक पदों (सेनापति और सूबेदार) पर बैठाते रहे। इस कारण राजनीतिक अस्थिरता पैदा होने लगी।

- गुलाम और आश्रित अपने मालिकों और संरक्षकों के प्रति तो वफ़ादार रहते थे मगर उनके उत्तराधिकारियों के प्रति नहीं।
- नए शासक के सिंहासन पर बैठते ही नए और पुराने सरदारों के बीच टकराहट शुरू हो जाती थी।
- सुलतानों द्वारा निचले तबके के लोगों को संरक्षण देने के कारण उच्च वर्ग के लोगों ने आलोचना की।
- फ़ारसी तवारीख के लेखकों ने 'निचले खानदान' के लोगों को ऊँचे पदों पर बैठाने के लिए दिल्ली के सुलतानों की आलोचना की है।

➔ सुलतानों ने सेनानायकों को इलाकों (इक़ता) के सूबेदार के रूप में नियुक्त किया। इन्हें सँभालने वाले अधिकारी को इक़तदार या मुक़ती कहते थे।

- मुक़ती का फ़र्ज था सैनिक अभियानों का नेतृत्व करना और अपने इक़तों में कानून और व्यवस्था बनाए रखना।
- अपनी सैनिक सेवाओं के बदले वेतन के रूप में मुक़ती अपने इलाकों से राजस्व की वसूली किया करते थे। इस रकम से वे अपने सैनिकों को तनख्वाह देते थे।
- मुक़ती लोगों पर काबू रखने के लिए उनके इक़ता को समय-समय पर स्थानांतरण कर दिया जाता था।

➔ सुलतान अलाउद्दीन खलजी और मोहम्मद तुग़लक़ के शासनकाल में नौकरी के इन कठोर नियमों का बड़ी सख्ती से पालन होता था।

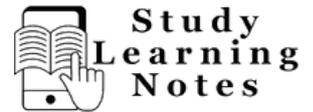
- मुक़ती लोगों द्वारा एकत्रित किए गए राजस्व की रकम का हिसाब रखने के लिए राज्य द्वारा लेखा अधिकारी नियुक्त किए जाते थे।
- इस बात का ध्यान रखा जाता था कि मुक़ती राज्य द्वारा निर्धारित कर ही वसूलें और तय संख्या के अनुसार सैनिक रखें।

➔ अलाउद्दीन खलजी के शासनकाल में भू-राजस्व के निर्धारण और वसूली के कार्य को राज्य अपने नियंत्रण में ले आया।

- स्थानीय सामंतों से कर लगाने का अधिकार छीन लिया गया, बल्कि स्वयं उन्हें भी कर चुकाने को बाध्य किया गया।
- सुलतान के प्रशासकों ने ज़मीन की पैमाइश की और इसका हिसाब बड़ी सावधानी से रखा।
- कुछ पुराने सामंत और ज़मींदार राजस्व के निर्धारण और वसूली अधिकारी के रूप में सल्तनत की नौकरी करने लगे।

उस समय तीन तरह के कर थे—

- (1) कृषि कर, जिसे खराज कहा जाता था और जो किसान की उपज का लगभग 50% होता था।
- (2) मवेशियों पर
- (3) घरों पर।



➔ इस उपमहाद्वीप का काफ़ी बड़ा हिस्सा दिल्ली के सुलतानों के अधिकार से बाहर था।

- बंगाल पर नियंत्रण करना कठिन था और दक्षिण भारत की विजय के तुरंत बाद वह पूरा क्षेत्र फिर से स्वतंत्र हो गया था।
- गंगा की मैदानी इलाकों के घने जंगलों में सुलतान की सेनाएँ पहुँचने में असक्षम थी। स्थानीय सरदारों ने इन क्षेत्रों में अपना शासन जमा लिया।
- इन इलाकों पर ज़ोर-ज़बरदस्ती का अधिकार कुछ ही समय तक रह पाता था।

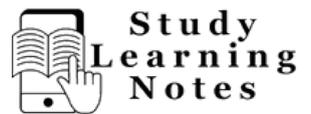
1219 में चंगेज़ ख़ान के नेतृत्व में मंगोलों ने उत्तर-पूर्वी ईरान में ट्रांसऑक्सियाना (आधुनिक उज़्बेकिस्तान) पर और इसके बाद दिल्ली सल्तनत पर हमला किया। अलाउद्दीन खलजी और मुहम्मद तुग़लक़ के शासनकालों के आरंभ में दिल्ली पर मंगोलों के धावे बढ़ गए। इससे मजबूर होकर दोनों ही सुल्तानों को एक विशाल स्थानीय सेना खड़ी करनी पड़ी।

पंद्रहवीं तथा सोलहवीं शताब्दी में सल्तनत

दिल्ली तथा आगरा पर सैयद तथा लोदी वंशों के शासनकाल तक जौनपुर, बंगाल, मालवा, गुजरात, राजस्थान तथा पूरे दक्षिण भारत में स्वतंत्र शासक उठ खड़े हुए थे। उनकी राजधानियाँ समृद्ध थीं और राज्य फल-फूल रहे थे। इसी काल में अफ़गान और राजपूतों जैसे नए शासक समूह भी उभरे।

➔ **शेरशाह सूर (1540-1545)** ने बिहार में अपने चाचा के एक छोटे-से इलाके के प्रबंधक के रूप में काम शुरू किया था और आगे चलकर उसने इतनी उन्नति की कि **हुमायूँ (1530-1540, 1555-1556)** तक को चुनौती दी और परास्त किया।

➔ **शेरशाह ने दिल्ली पर अधिकार कर सूर वंश (1540-1555) की स्थापना की।** इसके प्रशासन ने अलाउद्दीन खलजी वाले कई तरीकों को अपनाकर उन्हें और भी चुस्त बना दिया। आगे चलकर **अकबर (1556-1605)** ने अपने प्रतिमान के रूप में शेरशाह की प्रशासन व्यवस्था को ही अपनाया था।



<https://studylearningnotes.com>